बाढ़ का कहर

तुम्हें तो मालूम ही होगा कि इन दिनों हमारे लाखों लोग बाढ़ से जूझ रहे हैं। उनसे उनके मकान, सामान, पालतू जानवर सब छूट गए हैं। इनमें से कई लाख लोगों के पास एक झोंपड़ी और शायद एकाध पालतू जानवर रहे होंगे। वे छोटे-मोटे काम करके अपना गुज़ारा कर रहे थे। उनके पहले से मुश्किलों भरे जीवन में इस बाढ़ ने और मुसीबतें भर दीं। इस बाढ़ में कितनी ही जानें गई होंगी।

जो किसी तरह बाढ़ से बच गए उन्हें कपड़े-खाने के लाले पड़ रहे हैं। हालाँकि सरकार तथा अन्य संस्थाएँ उनकी मदद के लिए काम कर रही हैं पर यह अभी तक नाकाफी साबित हुई है। पूरे देश से लोग मदद कर रहे हैं। लोग अपने आसपास से कपड़े, रुपए-पैसे, दवाएँ जुटा रहे हैं और उन्हें बिहार के बाढ़ प्रभावित इलाकों में पहुँचा रहे हैं। तुम्हारे स्कूल या मोहल्ले में भी शायद लोग मदद के लिए सामग्री जुटा रहे होंगे।

तुम्हारी हमउम्र रिद्धि इन्दौर में रहती है। दूसरी कक्षा में पढ़ती है। कपड़े और खिलौने खरीदने के लिए वह पिछले एक साल से पैसे जोड़ रही थी। उसकी छोटी-सी गुल्लक अब लगभग भर गई थी। एक दिन रिद्धि ने बिहार की बाढ़ से पीड़ित एक बच्चे की तस्वीर अखबार में देखी। उसने अपने दादा से उस बच्चे के बारे में पूछा। दादा ने उसे विस्तार से बाढ़ के बारे में बताया। चुनौतियों का सामना कर रहे लोगों और बच्चों के बारे में बताया। रिद्धि यह सब सुनकर उदास हो गई। उसने अपनी गुल्लक तोड़ी और सारी की सारी चिल्हर-रुपए दादा को दे दिए। यह कहते हुए कि वे इन रुपयों को एक अखबार के कोष में दान कर दें जो बिहार के लोगों की मदद के लिए बनाया गया है।

एक अपील

एक अनुमान के हिसाब से बाढ़ से लगभग दस लाख लोग बेघर हो गए हैं।

लगभग दस हज़ार स्कूलों को नुकसान पहुँचा है। *बिहार सर्व शिक्षा अभियान*, *यूनीसेफ* तथा *प्रथम* ने मिलकर एक पहल की है। इसमें इन संगठनों के लोग बाढ़ प्रभावित इलाकों में जाएँगे और बच्चों के बीच कुछ गतिविधियाँ करेंगे।

इन गतिविधियों के दौरान बच्चों को मज़ेदार किताबें आदि भी दी जाएँगी।

कहानियों की और दूसरी किताबें, चार्ट, कॉपी, रंग आदि जुटाने में तुम बड़ी मदद कर सकते हो। जिन किताबों को तुम या तुम्हारे दोस्त पढ़ चुके हैं उन्हें *प्रथम* के इस पते पर भेज सकते हो।

प्रथम
7 आई.ए.एस. कॉलोनी
कदवई पुरी
पटना 800001
ई-मेल: Pratham.biharflood@gmail.com
संजय कुमार: 09431602357
रुकमणी बैनर्जी: 09810536145